दिनकर के काव्य में जागरण एवं राष्ट्रीय भावना

डॉ प्रियंका सिंह

"आजादी की लड़ाई में लगे हुए बलिदानी भारत की जो वीरता, जो स्वाभिमान, जो अधीरता और आक्रोश दिनकर में आकर प्रकट हुआ; कला के रूप में उसका विस्फोट पहले उतने जोर से नहीं हुआ था। उदय के साथ ही दिनकर का स्थान हिंदी के क्रांतिकारी कवियों में बन गया और काव्यलोभी जनता उनके प्रत्येक स्वर को अपने कंठ में बसाने लगी। दिनकर जी को जनता का प्यार राष्ट्रीय कविताओं के कारण मिला।"

राष्ट्रीय जागरण के कवि दिनकर ने अपने स्वर में तीनों कालों को ध्वनित करने का संकल्प लिया, इस विश्वास के साथ कि भूत की स्मृति और भविष्य की आशा वर्तमान को शक्ति प्रदान कर सकेगी।